

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 5 अध्याय 15: राजा गय की महिमा

22 September 2026

🙏 पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



विनम्रता में सिंहासनासीन और भक्ति से देदीप्यमान, राजा गय अपना प्रत्येक यज्ञ भगवान् विष्णु को अर्पित करते हैं — और समस्त अर्पणों के आत्मा स्वयं भगवान् प्रेम से पवित्र हुए हृदय के फल को स्वीकार करने साक्षात् पधारते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

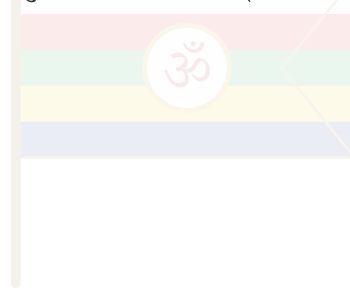
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्जम में पुनः आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। पिछले अध्याय में, श्रीशुक ने हमारे लिए जड़ भरत के वन-रूपक का अर्थ खोला — वह आत्मा जो संसार के अगम वन में भटकती रहती है, जब तक कि उसे सन्तों का संग नहीं मिल जाता। अब कथा की वह महान् धारा उस राजवंश में आगे बहती है जो सम्राट भरत के अपने ही कुल से प्रवाहित

हुआ। यहाँ श्रीशुक उस वंश में जन्मे श्रेष्ठ राजाओं को एक-एक कर नाम लेकर कहते हैं, और उनमें से एक देदीप्यमान आत्मा पर प्रेमपूर्ण विस्मय से ठहरते हैं — राजा गय, भगवान् विष्णु के एक अंश, जिनकी भक्ति इतनी शुद्ध थी कि भगवान् स्वयं उनके अर्पणों को स्वीकार करने पधारे, और जिनके आनन्द से समूची सृष्टि आनन्दित हुई।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 5 (पंचम स्कन्ध)
- अध्याय: 15 (पंचदश अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: भरत के वंशज और राजा गय की महिमा
- प्रमुख वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी (श्रीशुक), राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए
- प्रमुख श्रोता: राजा परीक्षित — और यह संवाद सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य में एकत्रित ऋषियों को पुनः सुनाया जाता है
- मुख्य स्थल: प्रियव्रत के कुल की राजवंश-परम्परा, उस सभा में वर्णित जहाँ श्रीशुक राजा परीक्षित को उपदेश देते हैं
- केन्द्रीय विषय: सम्राट भरत से प्रवाहित अटूट राजवंश — उनके पुत्र सुमति से लेकर विरज तक — और उसके भक्ति-शिखर पर प्रतिष्ठित यशस्वी राजा गय, भगवान् विष्णु के अंशावतार, जिनके निष्काम शासन और शुद्ध आराधना ने भगवान् और समस्त प्राणियों को प्रसन्न किया
- प्रमुख श्लोक-सीमा: स्कन्ध 5, अध्याय 15, श्लोक 1-16
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण



पिछले अध्याय से

चौदहवें अध्याय में, श्रीशुक ने राजा परीक्षित को जड़ भरत के वन-रूपक का भीतरी अर्थ समझाया — वह आत्मा जो संसार के घने वन में भटकते एक व्यापारी के समान है, इन्द्रियों के लुटेरों और सांसारिक जीवन के अनेक कष्टों से त्रस्त, और जिसका एकमात्र निश्चित उद्धार सन्तों के संग तथा भगवान् की प्रेममयी भक्ति की शरण में है। वह उपदेश महान् भक्त भरत की महिमा से समाप्त हुआ, जिनका स्मरण मात्र हृदय को पवित्र करता है। अब कथा उस राजकुल की ओर लौटती है जो स्वयं भरत से प्रवाहित हुआ, उसका पीढ़ी-दर-पीढ़ी निष्ठापूर्वक अनुसरण करते हुए।

श्रीशुक पावन वंश को आगे बढ़ाते हैं

पुनः सूत्र उठाकर, श्रीशुक ने सम्राट भरत के ज्येष्ठ पुत्र की बात कही — सुमति नामक एक आत्मा, जो भगवान् ऋषभ के पदचिह्नों पर दृढ़ता से चले, समस्त सांसारिक कामना से मुक्त एक शान्त तपस्वी का जीवन जीते हुए। उनका वैराग्य इतना देदीप्यमान था कि कलियुग के दूरस्थ काल में कुछ भ्रमित लोग, वेदों के प्रति समस्त श्रद्धा को त्यागकर, उनकी स्मृति को पकड़कर, अपनी ही दूषित कल्पना से, उन्हें एक ऐसा देवता ठहरा देंगे जो शास्त्रों में कहीं मान्य नहीं।

श्रीशुक उवाच

भरतस्यात्मजः सुमतिर्नामाभिहितो यमु ह वाव केचित्पाखण्डिन ऋषभपदवीमनुवर्तमानं चानार्या अवेदसमाम्नातां देवतां स्वमनीषया पापीयस्या कलौ कल्पयिष्यन्ति ॥ १ ॥

śrī-śuka uvāca bharatasyātmajaḥ sumatir nāmābhihito yam u ha vāva kecit pākhaṇḍina ṛṣabha-padavīm anuvartamānaṁ cānāryā aveda-samāmnātāṁ devatām sva-manīṣayā pāpīyasyā kalau kalpayiṣyanti

अर्थ: श्रीशुक ने कहा: सम्राट भरत के पुत्र का नाम सुमति था, जो भगवान् ऋषभ के मार्ग पर निष्ठापूर्वक चले; और यह वही हैं जिन्हें कुछ पाखण्डी, वेदों के प्रति कोई आदर न रखते हुए, कलियुग में अपनी ही दूषित कल्पना से एक ऐसे देवता के रूप में स्थापित करेंगे जो पावन शास्त्रों द्वारा मान्य नहीं। (स्कन्ध 5, अध्याय 15, श्लोक 1)



श्रीशुक राजा परीक्षित को बताते हैं कि किस प्रकार सम्राट भरत के पुत्र सुमति ने भगवान् ऋषभ के तपस्वी मार्ग का अनुसरण किया, इस पावन वंश के श्रेष्ठ राजाओं में प्रथम (श्लोक 1)।

सुमति से गय के जन्म तक

सुमति से, उनकी पत्नी वृद्धसेना के गर्भ से, देवताजित् नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। देवताजित् से, आसुरी के गर्भ से, देवद्युम्न आए; देवद्युम्न से, धेनुमती के गर्भ से, परमेष्ठी जन्मे; और परमेष्ठी से, सुवर्चला के गर्भ से, प्रतीह उत्पन्न हुए — एक ऐसे राजा जिन्होंने अनेकों को आत्मविद्या सिखाकर और भीतर से पूर्णतया शुद्ध होकर, परम पुरुष का अपने ही स्वरूप के रूप में साक्षात्कार किया।

श्रीशुक यहाँ इस नाम पर विशेष रूप से ठहरते हैं। प्रतीह ने केवल दूसरों से सुनी हुई बातें नहीं दुहराई; उन्होंने आत्मविद्या का मार्गदर्शन तभी आरम्भ किया जब उनका अपना हृदय पूर्णतया शुद्ध हो चुका था और उन्होंने परम पुरुष का प्रत्यक्ष साक्षात्कार अपने ही स्वरूप के रूप में कर लिया था। यही वह कसौटी है जिसे भागवत मौन रूप से युगों-युगों के प्रत्येक आत्मा के मार्गदर्शक के लिए रखता है — जिसने स्वयं सत्य को

नहीं देखा, उसके पास दूसरे को देने के लिए कुछ सच्चा नहीं होता। सुमति की उस स्मृति के सामने — जो आगे चलकर एक ऐसी उपासना में बदल दी गई जिसे किसी शास्त्र ने कभी मान्यता नहीं दी (श्लोक १) — प्रतीह का उदाहरण उसका उत्तर बनकर खड़ा है: चतुर कल्पना नहीं, अपितु वास्तविक साक्षात्कार ही वह आधार है जिस पर सच्ची शिक्षा टिक सकती है।

य आत्मविद्यामाख्याय स्वयं संशुद्धो महापुरुषमनुसस्मार ॥ ४ ॥

ya ātma-vidyām ākhyāya svayaṁ saṁśuddho mahā-puruṣam anusasmāra

अर्थ: प्रतीह ने आत्मविद्या का मार्गदर्शन तभी आरम्भ किया जब वे स्वयं पूर्णतया शुद्ध हो चुके थे और परम पुरुष का प्रत्यक्ष साक्षात्कार अपने ही हृदय में कर चुके थे। (स्कन्ध 5, अध्याय 15, श्लोक 4)

प्रतीह से, उनकी पत्नी सुवर्चला के गर्भ से, यज्ञ में निपुण तीन पुत्र उत्पन्न हुए — प्रतिहर्ता, प्रस्तोता और उद्गाता — और प्रतिहर्ता से, स्तुति के गर्भ से, अज और भूमा जन्मे। भूमा से आगे, पीढ़ी-दर-पीढ़ी वह वंश बहता रहा, प्रत्येक धर्मात्मा आत्माओं की श्रृंखला में एक नई कड़ी, जब तक कि वह वंश अपनी सबसे देदीप्यमान आत्मा तक न पहुँच गया — क्योंकि उसी वंश में जन्मे नक्त से, उनकी रानी द्रुति के गर्भ से, यशस्वी गय जन्मे, राजर्षियों में श्रेष्ठ, उदार और दूर तक फैली कीर्तिवाले, स्वयं भगवान् विष्णु के एक साक्षात् अंश, जो लोकों की रक्षा हेतु शुद्ध सत्त्व धारण करते हैं।

भूमन् ऋषिकुल्यायामुद्गीथस्ततः प्रस्तावो देवकुल्यायां प्रस्तावान्नियुत्सायां हृदयज आसीद्विभुर्विभो रत्यां च पृथुषेणस्तस्मान्नक्त आकृत्यां जज्ञे नक्ताद्रुतिपुत्रो गयो राजर्षिप्रवर उदारश्रवा अजायत साक्षाद्भगवतो विष्णोर्जगद्रिरक्षिषया गृहीतसत्त्वस्य कलाऽऽत्मवत्त्वादिलक्षणेन महापुरुषतां प्राप्तः ॥ ६ ॥

bhūmna ṛṣikulyāyām udgīthas tataḥ prastāvo devakulyāyām prastāvān niyutsāyām hṛdayaja āsīd vibhur vibho ratyām ca pṛthuṣeṇas tasmān nakta ākūtyām jajñe naktād druti-putro gayo rājarṣi-pravara udāra-śravā ajāyata sākṣād bhagavato viṣṇor jagad-rirakṣiṣayā gṛhīta-sattvasya kalātmavattvādi-lakṣaṇena mahā-puruṣatām prāptaḥ

अर्थ: भूमा से, ऋषिकुल्या के गर्भ से, उद्गीथ आए; उद्गीथ से, देवकुल्या के गर्भ से, प्रस्ताव; प्रस्ताव से, नियुत्सा के गर्भ से, विभु; विभु से, रति के गर्भ से, पृथुषेण; और पृथुषेण से, आकृति के गर्भ से, नक्त। नक्त और उनकी रानी द्रुति को यशस्वी गय की प्राप्ति हुई — राजर्षियों में श्रेष्ठ एवं उदार कीर्तिवाले, भगवान् विष्णु के साक्षात् अंश, जो विश्व की रक्षा हेतु शुद्ध सत्त्व धारण करते हैं, तथा जिन्होंने आत्मसंयम एवं अन्य उदात्त गुणों से महापुरुष पद प्राप्त किया। (स्कन्ध 5, अध्याय 15, श्लोक 6)



राजा नक्त और रानी द्रुति के यहाँ जन्मे, बालक गय भगवान् विष्णु के एक अंश के रूप में संसार में आते हैं, राजर्षियों में श्रेष्ठ और महापुरुषों में गिने जाने को नियत (श्लोक 6)।

गय, विष्णु के अंश जो अभिमान बिना शासन करते थे

गय को इतना प्रिय बनाने वाला केवल उनका जन्म ही न था, अपितु उनके जीने का ढंग था। अपने राजधर्म से — अपनी प्रजा की रक्षा करते, उनका पोषण करते, उन्हें प्रसन्न करते, एक पिता के स्नेह से उनका लालन करते और कोमलता से मार्गदर्शन करते हुए, तथा यज्ञों और पुण्यकर्मों से — उन्होंने अपने समूचे अस्तित्व सहित सब कुछ परम पुरुष भगवान् विष्णु को अर्पित कर दिया, जो सर्वोच्च से भी उच्चतर और अनन्त ब्रह्म के साथ एक हैं। ब्रह्म को साक्षात्कार करने वालों के चरणों की निरन्तर सेवा से उन्हें प्रेममयी भक्ति का धन प्राप्त हुआ; और उनका मन, इस प्रकार बार-बार शुद्ध होकर, सर्वोच्च फल देने योग्य बन गया। उस मन में, देह के प्रत्येक मिथ्या दावे से मुक्त, ब्रह्म की उपस्थिति स्वतः प्रकाशित हुई, और उन्होंने परमात्मा के साथ अपनी एकता को जाना। फिर भी — और यहीं आश्चर्य है — उनमें अभिमान का लेश भी न था, और उसी पूर्ण विनम्रता के भाव में उन्होंने समूची पृथ्वी पर शासन किया।

राजा गय की स्तुति में गाए गीत

यह राजा इतने महान् थे कि प्राचीन कथाओं के ज्ञाता आज भी पावन श्लोकों में उनकी महिमा गाते हैं। वे पूछते हैं, कौन-सा दूसरा राजा, जब तक कि वह भगवान् का ही एक अंश न हो, अपने कर्मों से गय की समता कर सकता है — महान् यज्ञों का कर्ता, विशाल ज्ञान का धनी, धर्म का निर्भय रक्षक, लक्ष्मी द्वारा वरा गया, पवित्र पुरुषों की सभाओं का सम्मानित प्रधान, और सन्तों का विनम्र सेवक?

उनके अभिषेक के समय, दक्ष की सती कन्याओं ने — जिनके आशीर्वाद कभी व्यर्थ नहीं जाते — पावन नदियों के साथ, परम आनन्द में उन्हें स्नान कराया और अभिषिक्त किया। और यद्यपि उन्होंने स्वयं अपने लिए कुछ न चाहा, धरती माता ने, उनके गुणों से आकर्षित होकर, जैसे गाय का थन बछड़े को देखकर बहने लगता है, उनकी प्रजा को वह सब दिया जो वे चाह सकते थे।

यमभ्यषिञ्चन् परया मुदा सतीः सत्याशिषो दक्षकन्याः सरिद्धिः । यस्य प्रजानां दुदुहे धराऽऽशिषोनिराशिषो गुणवत्सस्नुतोधाः ॥ १० ॥

yam abhyaśiñcan parayā mudā satīḥ satyāśīṣo dakṣa-kanyāḥ saridbhiḥ yasya prajānām duduhe dharāśīṣo nirāśīṣo guṇa-vatsa-snutodhāḥ

अर्थ: परम आनन्द में दक्ष की सती कन्याओं ने, जिनके आशीर्वाद कभी व्यर्थ नहीं जाते, पावन नदियों के साथ, गय को पवित्र जल से अभिषिक्त किया। और यद्यपि गय ने स्वयं कुछ न चाहा, पृथ्वी उनके सद्गुणों पर वैसे ही रीझ गई जैसे बछड़े को देखते ही गाय का थन दूध से भर आता है, और उन्होंने उनकी प्रजा की समस्त इच्छाएँ पूर्ण कर दीं। (स्कन्ध 5, अध्याय 15, श्लोक 10)



गय के अभिषेक पर दक्ष की शुद्ध कन्याएँ और पावन नदियों के देवगण उन्हें पवित्र जल से अभिषिक्त करते हैं, जबकि प्रसन्न धरती उनकी प्रजा के लिए समृद्धि उड़ेल देती है (श्लोक 10)।

वेदों और पावन कर्मकाण्डों ने भी उन्हें प्रत्येक भोग दिया, यद्यपि उन्होंने किसी की कामना न की; कभी शत्रु रहे राजा उन्हें कर लाकर देने लगे; और ब्राह्मणों ने, उनके धर्म से सम्मानित होकर, अपनी तपस्याओं से अर्जित पुण्य का छठा भाग उन्हें सौंप दिया।

भगवान् स्वयं गय का अर्पण स्वीकार करते हैं

यहाँ स्तुति अपने सर्वोच्च स्वर तक उठती है। गय के महान् यज्ञ में, जहाँ सोमरस की प्रचुर धाराएँ उड़ेली गई, देवताओं के अधिपति इन्द्र तक उस अर्पण से मत्त हो उठे। फिर भी परम भगवान् स्वयं, समस्त यज्ञ के आत्मा, साक्षात् पधारे और उस आराधना का फल स्वीकार किया — क्योंकि गय ने उसे अविचल, प्रेममयी भक्ति से निर्मल हुई श्रद्धा से अर्पित किया था।

यस्याध्वरे भगवानध्वरात्मामघोनि माद्यत्युरुसोमपीथे । श्रद्धाविशुद्धाचलभक्तियोग-समर्पितेज्याफलमाजहार ॥ १२ ॥

yasyādhvare bhagavān adhvarātmā maghoni mādyaty uru-soma-pīthe śraddhā-viśuddhācala-bhakti-yoga-samarpitye-jyā-phalam ājahāra

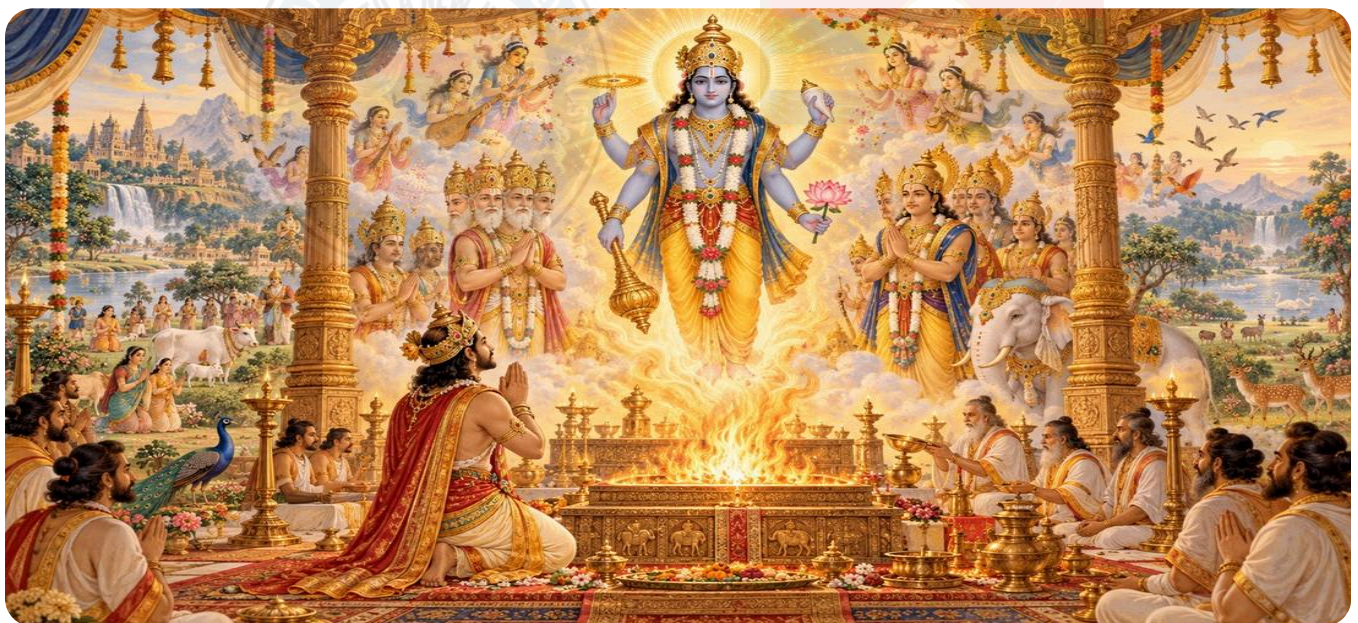
अर्थ: गय के यज्ञ में, जहाँ सोमरस की प्रचुर धाराएँ अर्पित हुई और इन्द्र मत्त हो उठे, परम भगवान् स्वयं, समस्त यज्ञ के आत्मा, साक्षात् पधारकर उस अर्पण का फल स्वीकार किया, जिसे गय ने अविचल प्रेममयी भक्ति से निर्मल हुई श्रद्धा से प्रस्तुत किया था। (स्कन्ध 5, अध्याय 15, श्लोक 12)

और भगवान् क्यों न आते? जब वे प्रसन्न होते हैं, तब सब कुछ जो जीता है एक साथ प्रसन्न हो जाता है — क्योंकि वही समूचे विश्व के प्राण हैं। ब्रह्मा से लेकर देवताओं तक, मनुष्यों तक, पशुओं तक, पौधों और सबसे छोटी घास की पत्ती तक, जब वे तृप्त होते हैं तब समूची सृष्टि तृप्त होती है। वे भगवान्, जो सदा अपने में ही तृप्त हैं और जिन्हें किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं, गय के यज्ञ से प्रत्यक्ष रूप में आनन्दित हुए।

यत्प्रीणनाद्बर्हिषि देवतिर्यङ्-मनुष्यवीरुत्तृणमाविरिज्यात् । प्रीयेत सद्यः स ह विश्वजीवःप्रीतः स्वयं प्रीतिमगाद्गयस्य ॥ १३ ॥

yat-prīṇanād barhiṣi deva-tiryaṅ- manuṣya-vīrut-tṛṇam āviriñcāt prīyeta sadyaḥ sa ha viśva-jīvaḥ prītaḥ svayaṁ prītim agād gayasya

अर्थ: जब भगवान् प्रसन्न होते हैं, तब समूची सृष्टि — ब्रह्मा से लेकर देवताओं, मनुष्यों, पशुओं, पौधों और सबसे छोटी घास की पत्ती तक — एक साथ तृप्त हो जाती है, क्योंकि वही सबके प्राण हैं। वे भगवान्, जो सदा अपने में ही तृप्त हैं, गय के यज्ञ से प्रत्यक्ष रूप में आनन्दित हुए। (स्कन्ध 5, अध्याय 15, श्लोक 13)



गय के महान् यज्ञ में समस्त अर्पणों के आत्मा परम भगवान् भक्ति से पवित्र हुए हृदय के फल को ग्रहण करने साक्षात् पधारते हैं, और समूची सृष्टि उनके आनन्द में सहभागी होती है (श्लोक 12-13)।

वंश विरज तक आगे बढ़ता है

गय से, उनकी पत्नी गयन्ती के गर्भ से, तीन पुत्र उत्पन्न हुए — चित्ररथ, सुगति और अवरोधन। चित्ररथ से, ऊर्णा के गर्भ से, सम्राट् आए; सम्राट् से, उत्कला के गर्भ से, मरीचि; मरीचि से, बिन्दुमती के गर्भ से, बिन्दुमान्; बिन्दुमान् से, सरघा के गर्भ से, मधु; मधु से, सुमना के गर्भ से, वीरव्रत; वीरव्रत से, भोजा के गर्भ से, मन्थु और प्रमन्थु; मन्थु से, सत्या के गर्भ से, भौवन; भौवन से, दूषणा के गर्भ से, त्वष्टा; त्वष्टा से, विरोचना के गर्भ

से, विरज; और विरज से, विषूची के गर्भ से, सौ पुत्र — जिनमें ज्येष्ठ शतजित् थे — और एक कन्या भी उत्पन्न हुई।

इस विरज के विषय में, जो वंश में सबसे अन्त में जन्मे, पावन श्लोक आज भी गाता है: कि उन्होंने प्रियव्रत के समूचे वंश को अपनी कीर्ति से अलंकृत किया, ठीक वैसे ही जैसे भगवान् विष्णु ने कभी वामन, दिव्य वटु के रूप में देवताओं के मध्य प्रकट होकर उन्हें कीर्ति से अलंकृत किया।

प्रियव्रतं वंशमिमं विरजश्चरमोद्भवः । अकरोदत्यलं कीर्त्या विष्णुः सुरगणं यथा ॥ १६ ॥

praiyavratam vaṁśam imam virajaś caramodbhavaḥ akarod aty-alam kīrtiā viṣṇuḥ sura-gaṇam yathā

अर्थ: वंश में सबसे अन्त में जन्मे विरज ने प्रियव्रत के कुल को अपनी यश-कीर्ति से भूषित किया, ठीक उसी तरह जैसे भगवान् विष्णु ने वामन रूप धारण कर देवताओं की सभा को अपनी महिमा से सुशोभित किया था। (स्कन्ध 5, अध्याय 15, श्लोक 16)



विरज, वंश में सबसे अन्त में जन्मे, प्रियव्रत के समूचे वंश को अपनी कीर्ति से अलंकृत करते हैं, जैसा पावन श्लोक उन्हें देवताओं को कीर्ति देने वाले भगवान् विष्णु के समान बताता है (श्लोक 16)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

एक पावन वंश समर्पित आत्माओं की श्रृंखला है। सुमति से विरज तक, यह राजकुल अपने विजयों या अपने धन के लिए स्मरण नहीं किया जाता, अपितु इसलिए कि पीढ़ी-दर-पीढ़ी उसने धर्म और भक्ति के मार्ग पर चरण रखे। हमारी सच्ची विरासत वह नहीं जो हम रखते हैं, अपितु वह श्रद्धा है जो हम पाते और आगे सौंपते हैं।

महानता समर्पण से मापी जाती है, शक्ति से नहीं। गय ने समूची पृथ्वी पर शासन किया, फिर भी भागवत उनकी प्रशंसा सबसे बढ़कर इसलिए करता है कि उन्होंने अपना प्रत्येक कर्म भगवान् विष्णु को अर्पित किया और तनिक भी अभिमान न रखा। सच्ची गरिमा इसमें नहीं कि हम किस पर आज्ञा चलाते हैं, अपितु इसमें कि हम किसकी सेवा करते हैं।

भक्ति स्वयं भगवान् को निकट खींच लाती है। गय की श्रद्धा अविचल प्रेम से निर्मल थी, और इसीलिए भगवान् स्वयं उनका अर्पण स्वीकार करने पधारे। भगवान् यज्ञ के वैभव को नहीं, अपितु हृदय की शुद्धता को उत्तर देते हैं।

जब भगवान् प्रसन्न होते हैं, समस्त प्राणी धन्य होते हैं। क्योंकि गय ने उन्हें प्रसन्न किया जो सबके प्राण हैं, समूची सृष्टि — देवता, मनुष्य, पशु, यहाँ तक कि विनम्रतम घास की पत्ती — उस आनन्द में सहभागी हुई। भगवान् से प्रेम करना समूचे संसार को आशीर्वाद देना है।

सच्ची भक्ति कभी अपने फल की खोज नहीं करती। गय ने अपने लिए कुछ न चाहा, फिर भी धरती, वेदों और पावन कर्मकाण्डों ने अपने उपहार उनकी प्रजा पर उँड़ेल दिए। जब हृदय पकड़ना छोड़ देता है, तब समृद्धि उसके द्वारा दूसरों तक बहती है।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

नामों के एक अध्याय को शीघ्रता से लौंघ जाना सरल होगा, मानो वह केवल राजाओं की एक सूची हो। किन्तु और ध्यान से सुनिए, और यह वंश गाता है। प्रत्येक नाम एक ऐसी आत्मा है जो कभी जीती थी, जिसने शासन किया और प्रार्थना की और भक्ति की ज्योति अगली पीढ़ी को सौंपी — भगवान् की ओर मुड़े हृदयों का एक लम्बा जुलूस, उन युगों तक फैला जिनकी हम मुश्किल से कल्पना कर सकते हैं। और उनके मध्य गय खड़े हैं, और उनमें कुछ ऐसा है जो हमें ठहरा देता है। यहाँ एक ऐसा पुरुष था जिसने समूची पृथ्वी अपने हाथ में थामी और उससे कुछ न चाहा; जिसने महानतम यज्ञ किए और कोई श्रेय न लिया; जिसकी पावन नदियों और दक्ष की कन्याओं ने आराधना की, और फिर भी जो अभिमान के लेश बिना शासन करता रहा। उनके जीवन का शिखर उनका सिंहासन न था, अपितु उनका समर्पण था — और उस समर्पण को स्वयं भगवान् ने उत्तर दिया, उनका प्रेम ग्रहण करने साक्षात् पधारकर। यही वह शान्त वचन है जो भागवत हममें से प्रत्येक के समक्ष रखता है: कि स्वर्ग की दृष्टि में महानता इससे अधिक कुछ नहीं, और इससे कम कुछ नहीं, कि हृदय अभिमान से रिक्त और भगवान् के प्रेम से भरा हो। हमें कोई साम्राज्य चलाने की आवश्यकता नहीं। हमें केवल वह अर्पित करना है जो हमारे पास है, जैसे गय ने किया, और वही भगवान् उतने ही निकट खिंच आएँगे।

एक दैनिक भक्ति-साधना

आज, एक ऐसा कर्तव्य चुनिए जो आपका करना है — आपका कार्य, अपने परिवार के प्रति आपकी देखभाल, किसी दूसरे की कोई छोटी-सी सेवा — और आरम्भ करने से पहले उसे मौन रूप से भगवान् विष्णु को अर्पित कीजिए, जैसे राजा गय ने अपना समूचा राज्य अर्पित किया। उसे यत्न से और प्रशंसा की खोज बिना कीजिए, और जब वह पूरा हो जाए, तो उसका कोई श्रेय मत लीजिए; उसका फल भगवान् के चरणों में रखकर मन ही मन कहिए: “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” इस प्रकार एक साधारण कर्म भी एक यज्ञ बन जाता है, और एक साधारण दिन भी आराधना बन जाता है। गय का उदाहरण आपको स्मरण कराए कि भगवान् हमारे अर्पण के आकार को नहीं तौलते, अपितु उस प्रेम को जिससे वह दिया गया है।

उपसंहार

पंचम स्कन्ध का पंद्रहवाँ अध्याय हमें उस पावन राजवंश के साथ ले चलता है जो सम्राट भरत से प्रवाहित हुआ — उनके पुत्र सुमति से, अनेक धर्मात्मा राजाओं के माध्यम से, विरज तक, जो सबसे अन्त में जन्मे और जिन्होंने प्रियव्रत के समूचे वंश को अपनी कीर्ति से अलंकृत किया। इस वंश के भक्ति-हृदय पर राजा गय देदीप्यमान हैं, भगवान् विष्णु के एक साक्षात् अंश, जिन्होंने अपनी प्रजा की रक्षा और लालन किया, अपना प्रत्येक कर्म प्रेममयी सेवा में अर्पित किया, और समूची पृथ्वी पर अभिमान के लेश बिना शासन किया। उनकी भक्ति इतनी शुद्ध थी कि पावन

नदियों ने उन्हें अभिषिक्त किया, धरती ने उनकी प्रजा पर समृद्धि उँडेल दी यद्यपि उन्होंने कुछ न माँगा, और परम भगवान् स्वयं उनके यज्ञ का फल स्वीकार करने साक्षात् पधारे — और भगवान् के आनन्द से समूची सृष्टि आनन्दित हुई। यह एक ऐसा अध्याय है जो एक मात्र वंशावली को एक स्तोत्र में बदल देता है, हमें सिखाते हुए कि सच्ची महानता विजय या मुकुट नहीं, अपितु भगवान् को पूर्णतया समर्पित एक हृदय है।

श्रीमद्भागवतम् की दिव्य विद्या हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति को जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

संदर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण, पंचम स्कन्ध, पंचदश अध्याय, “An account of Priyavrata’s posterity continued।”
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञान · विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में। यह किसी एक प्रकाशक के सतत अनुवाद अथवा टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के संरक्षण अथवा समर्थन का कोई भाव अभिप्रेत नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-5-chapter-15-descendants-of-bharata-and-king-gaya-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञान · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट